जीवन में शांति कैसे मिले ?

आज हर एक मनुष्य शांति चाहता है, जहां तक कि बडे-बडे ऋषि-मुनि भी शांति की खोज में जंगलों में जाकर तपस्या करते थे, कि वहां शांति मिलेगी. लेकिन उन्हे भी शांति नहीं मिली. कहते हैं ऋषि-मुनि जब जंगलों में तपस्या करते थे तो राक्षस उनकी तपस्या में विघ्न पैदा करते थे. आज तो बडे बडे साधु-संत श्री-श्री १००८ कहलानेवाले शहरों की तरफ भाग रहे हैं. यथार्थ शांति से वे भी दूर हैं. शांति जंगलों में या बाजार में नहीं मिलती है. बाजार में अगर शांति मिलती होती, तो आज पैसेवाले शांति में होते. लेकिन देखा गया है कि जितने अधिक पैसेवाले हैं, उन्हें ज्यादा अशांति है. सच्चे शांतिदाता तो एक परमपिता परमात्मा ही है. उन्हें हम शांति का सागर कहते हैं परंतु क्या उसकी अनुभूति या उसका ज्ञान सबको है और अगर है तो उसपर अमल क्यों नहीं करते ?

शांति आत्मा का स्वधर्म है. यह बात सब मनुष्य आत्माएं जानकर मान लें, तो आज सारे वश्व में जो देहभान के कारण अशांति फैली हुई है, वह समाप्त हो जाए और शांति की शीतल धारा से इस धरा पर स्वर्ग उतर आए.

शांति के लिए स्वर्ग, रामराज्य या नवयुग की बात तो आज बहुत लोग कहते हैं, लेकिन प्रथत यह जानना जरूरी है कि स्वर्ग कोई उपर नहीं होता. स्वर्ग तो इस धरा पर होता है जब श्री लक्ष्मी-नारायण, श्री सीता-श्रीराम इस धरती पर राज्य करते हैं. कहते हैं, राम के राज्य में कोई दुःखी नहीं था. तुलसीदासजी ने कहा है - ''दैहिक, दैविक, भौतिक तापा, रामराज्य काहुहि नहीं त्यापा ।'' राम के राज्य में सभी सुखी थे. यहां तक कि पशु-पक्षी भी जो आज हिंसक हैं, वह भी अहिंसक थे. कहते हैं राम के राज्य में शेर और गाय भी एक घाट पर पानी पीते थे. किसी को किसी भी प्रकार के दुःख, तकलीफ नहीं थी. तो क्या फिर इस धरा पर ऐसा स्वर्ग आ सकता है? क्यां नहीं! अगर हम सभी मनुष्य आत्माएं देहभान को छोडकर आत्मा निश्चय करें और दैवीगुण धारण करें तो अवश्य ही इस धरा पर स्वर्ग आ सकता है. आज देहभान के कारण ही तो हर तरफ अशांति है. इस कारण की हम स्वयं को देह मान रहे हैं. कितनी बडी भूल है कि अगर मोटर का ड्रायव्हर अपने आप को मोटार समझ ले, तो इसे अज्ञानता के सिवाए और क्या कहेंगे.

आज विज्ञान बहुत तरक्की पर है. आज का मानव चन्द्रमा पर तो पहुंच गया, लेकिन अपने आपको नहीं जानता. कोई कहता है - ''मैं हिंदू हूं, कोई कहता है मैं मुसलमान हूं'' लेकिन यह नहीं जानता, कि हम सब एकही पिता परमात्मा की संतान है. जिसे हमने दैहिक धर्मों मं पडकर कहीं ईश्वर कहा, कहीं खुदा कहा और कहीं गॉड कहा. यह सभी नाम उस परमात्मा के ही हैं, जिसकी हम संतान हैं. आज मंदिरों में जाकर तुम्ही हे माता-पिता तुम्हीं हो....कहते हैं. या गुरूद्वारो में जाकर माथा टेकते हैं, और मस्जिदों में ''अल्लाह हो अकबर'' कहकर बुलाते हैं. तो वह हमारा पिता है, हम उसके बच्चे हैं. फिर हिंदू-मुस्लिम का सवाल कहां आता है? यह तो देह के धर्म हैं, जिन्हें हमने अज्ञानतावश पकड रखा है. आज हम सब इस अज्ञानता को छोडकर आपस में भाई-भाई की तरह रहें, एक-दुसरे को आदर की दृष्टि से देखें.

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com